03/11/21

Q→ भक्तिन का चरित्र-चित्रण ?

⇒ भक्तिन का चरित्र-चित्रण :— महादेवी वर्मा रचित 'भक्तिन' रेखाचित्र की केंद्र बिंदु भक्तिन हैं। प्रस्तुत रेखाचित्र में भक्तिन आदि से अंत तक रहती हैं। एक तरह से देखा जाए तो भक्तिन ही प्रस्तुत रेखाचित्र की मेरूदंड हैं।

भक्तिन के चरित्र और व्यक्तित्व को दो सोपानों में विभाजित किया जा सकता हैं। महादेवी वर्मा के आने से पूर्व का जीवन कहानी और महादेवी के साथ का कहानी। अत: भक्तिन के चरित्र को निम्नलिखित बिंदुओं के द्वारा हम देख सकते हैं—

① स्वाभिमान और सम्मान की भावना।
② सूझबूझ और व्यवहार की कुशलता।
③ आदर्श पतिव्रता नारी
④ संघर्षमय नारी।
⑤ अनन्य सेविका।
⑥ स्नेह और सहानुभूति की भावना।
⑦ जिद्दी स्वाभाव।
⑧ कुछ अवगुण।

① स्वाभिमान और सम्मान की भावना → भक्तिन बड़े बाप की बेटी है। बचपन में माँ की मृत्यु हो जाने के कारण विमाता की छाया में उसे रहना पड़ा पिता के असीम दुलार ने उसे माँ का अभाव खटकने नहीं दिया। पिता की अस्वतंत्रता और सम्मान रक्षा की भावना भक्तिन में भी आ गई। पिता के मृत्यु से मायका से उसका संबंध ही विच्छेद हो गया। तीन - तीन पुत्रियों की माँ बनने के कारण ससुराल में सास और उसकी जेठानियों ने उसकी उपेक्षा की। घर के सारे कठिन काम उसी को करने पड़ते स्वाभिमान और सम्मान की भावना से प्रेरित होकर वह परिवार से पृथक हो जाती है और पति के साथ अभिराम परिश्रम करके समृद्ध गृहस्थी की स्थापना करती है।

② सूझबूझ और व्यवहार की कुशलता → परिवार के लोगों का अपने संपत्ति पर दाँत और षड्यंत्र को देखकर भक्तिन यथार्थ स्थिति को समझ जाती है। वह छोटी लड़कियों का विवाह कर उसको ससुराल पहुँचा देती है और पति के चुने हुए बड़े दामाद को घर जमाई बनाकर भविष्य में अपने संपत्ति को सुरक्षित रखने का प्रयास करती है।

③ आदर्श पतिव्रता नारी → भक्तिन पतिव्रता नारी का महान आदर्श उपस्थित करती है। पति की असमय मृत्यु से यद्यपि वह टूट जाती है परंतु दूसरे के बैठने

का विचार तक नहीं करती है। घरवाले यही चाहते थे कि वह दूसरे के बैठ जाए जिससे उसकी जायदाद पर अधिकार मिल सके ऐसा प्रस्ताव आने पर भक्तिन क्रोध से आंगन में पैर पटक - पटक कर आक्रोश में कहती - " हम कुकरी - बिलारी ना होय, हमार मन पुसाई तौ हम दूसरा के जाब नाहिंत तुम्हारे पचौं की छाती पै होरहा भूंजब और राज करब, समुझे रहौ।"

भक्तिन ऐसी पतिव्रता नारी थी कि उसने गुरू से कान फुकवा, कंठी बाँध और पति के नाम पर घी से चिकने केशों को समर्पित कर उसने कभी न ढालने की घोषणा कर दी।

④ **संघर्षमय नारी** ⟶ भक्तिन का जीवन दुर्भाग्य की एक लंबी कहानी है वह जन्म से अभागिन रही बचपन में माँ बिछोर के पश्चात उसे विमाता के शासन में रहना पड़ा। 29 वर्ष के अवस्था में पति स्वर्गवासी हो गया, कुछ वर्षों बाद ही बड़ी पुत्री विधवा हो गई और परिवार के लोगों के षड्यंत्र से तीतरबाज चरित्र भ्रष्ट गृहस्थी धूल में मिल गई परंतु भीषण विपत्तियों की परिस्थितियों के हालात ने उसको झुका न पाए। वह सम्मान पूर्वक जीवन व्यतित करने के उद्देश्य से शहर में काम की तलाश में निकल आई।

⑤ **अनन्य सेविका** ⟶ महादेवी के यहाँ आकर भक्तिन अनन्य सेविका भाव का परिचय देती है। महादेवी के शब्दों में वह सेवक धर्म में हनुमान से स्पर्द्धा करने

वाली है। अपनी अनन्य सेवा से ही भक्तिन महादेवी के जीवन का अभिन्न अंग बन गई वह सदैव महादेवी के साथ छाया बनकर रहती है। वह व्यक्तित्व से महादेवी को इतना अधिक घेरी हुई थी कि वह सेविका नहीं अपितु अभिभाविका ही बन गई थी। महादेवी जी उसकी व्यक्तित्व को स्वीकार करती हुई कहती है – "भक्तिन और मेरे बीच सेवक - स्वामी का संबंध है, यह कहना कठिन है; क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना गया, जो स्वामी के चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हंस दे।"

⑥ स्नेह और सहानुभूति की भावना ⟶ परिवार की विछायन प्रातरनाओं तथा परिस्थिति के झंझावत ने भक्तिन को स्वभाव को यद्यपि अखर और जिद्दी बना दिया था परंतु मूलत: वह संवेदनाशील थी और सहानुभूति से भरा हुआ था छात्रावास की बालिकाओं को वह बहुत कम काम कराती और स्वतंत्रता आंदोलन में किसी विद्यार्थी के जेल जाने का सामाचार सुनकर व्याकुल हो उठती। महादेवी भक्तिन के लिए कहा है – "एक स्नेह और सहानुभूति की आभा फूटती रहती है, इसी से उसके संपर्क में आनेवाले व्यक्ति उसमें जीवन की सहज मार्मिकता ही पाते हैं।"

⑦ जिद्दी स्वभाव ⟶ भक्तिन जिद्दी स्वभाव की थी, वह दूसरों तथा आस - पास के वातावरण को प्रभावित करने में सक्षम थी परंतु उस पर दूसरों का किंचित भी प्रभाव नहीं

पड़ता था। उसने महादेवी के खाने - पीने का परहेज छुड़ा दिया परंतु स्वयं उनके खान - पान से प्रभावित नहीं हुई। महादेवी के बार - बार कहने पर भी वह धोती साफ नहीं रखती, वर्षों तक महादेवी के साथ रहने पर भी वह हेहातिन ही बनी रही।

⑧ कुछ अवगुण → भक्तिन के प्रवृत्ति में कुछ अवगुण भी मिलते हैं जिनका उल्लेख महादेवी ने किया है। भक्ति गुरू से कान फुकवा कर, कंठी धारण कर तथा सिर मुंडवा कर सन्यासी हो गई थी। इसी कारण खाने पीने के मामलों में वह छुआ - छुत का बहुत ध्यान रखती थ वह अपने चौके को कोयले की रेखा से घेर दिया करती कोई उसके खाने को छू ना ले इसलिए वह दोनों समय अपना खाना पहले ही बनाकर, ताट के ऊपर रख दिया करती थी। भक्तिन थोड़ी बहुत चोरी भी करती और झू भी बोलती।

● निष्कर्ष → अत: निष्कर्ष यह कह सकते हैं कि 'भक्तिन' नामक रेखाचित्र भक्तिन की ही चरित्र केंद्र बिंदु है। महादेवी जी ने प्रस्तुत रेखाचित्र में भक्तिन की अच्छी - बुरी सब आदतों को हमारे सामने रख दिया है